Volume - 6 (2025)
Special Issue - 1 (March)
RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal
ISSN
2582-9173
Website : www.researchhub.org.in/research-hub !! Email : researchhubjournal@gmail.com

‘शेषयात्रा’ उपन्यास में चित्रित नारी चेतना

गुड्डी परवीन निसार अहमद खान
शोधार्थी हिंदी विभाग
डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्लू एस. कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, कामठी रोड, नागपुर
मो. ८८४७७८६०३४
ईमेल :- guddiparveen@rediffmail.com

सारांश :

अनादि काल से ही नारी को समाज में दुय्यम स्थान ही दिया। स्त्री विमर्श नारी जीवन और संघर्ष को रेखांकित करता है। अंत: यह कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श नारी के प्रति होनेवाले शोषण के विरूद्ध एक संघर्ष की चेतना है। उषा प्रियंवदा ने अपने विवेच्य उपन्यास के माध्यम से व्यावहारिक नारी चेतना को अभिव्यंजित किया है। उषा प्रियंवदा की नारी चेतना किसी विचारधारा, सिद्धांत, वाद से भी होते हुए बल्कि सहज ही उनके जीवन के व्यावहारिक रुप में प्रकट हुई है।

भारतीय समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण हैं। नारी का पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक समस्याओं के प्रति मुक्ति पाने का प्रयत्न ही नारी चेतना हैं। उषा प्रियंवदा कृत ‘शेषयात्रा’ में नारी चेतना को उजागर किया गया हैं। ‘शेषयात्रा’ की अनु उपन्यास के शुरूवाती भाग में एक पारंपरिक भारतीय महिला के रुप में उभरी है। और उत्तरार्ध में आधुनिक महिला के रुप में उभरी है। महिलाओं के बीच संघर्ष और उनके जीवन की गतिविधियों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। उम्र, वर्ग, नस्ल आदि से संबंधित समाज की अपेक्षाएँ।

‘शेषयात्रा’ प्रियंवदा का महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। इसमें लेखिका के विचारों की गहराई का कलात्मक चित्रण हुआ है। इस उपन्यास की रचना विदेशी पार्श्वभूमि पर की गई है। उपन्यास दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में उपन्यास नायिका अनु के प्रारंभिक जीवन से लेकर प्रणव से तलाक मिलने तक की घटनाओं का समावेश हुआ है। दूसरे भाग में तलाकशुदा नारी अनु से दूसरे नए जीवन का प्रारंभ और अंत में अपने पूर्व जीवन के सभी भागों से मुक्त, स्वतंत्र, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर नारी के रुप में अनु का चित्रण हुआ है।

बीज शब्द : नस्ल, विवेच्य, अभिव्यंजित, सिध्दांत, पार्श्वभूमि।

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में साठ के दशक से नारी मुक्ति की चेतना उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर हुई। नारी और समाज का संबंध अटूट अन्योन्याश्रित हैं। नारी से समाज को प्रेम, प्रेरणा, सृष्टि और शक्ति मिली है। हिंदी

में स्वातंत्र्योत्तर काल के महिला लेखन में स्त्री–पुरुष के संबंधों को दांपत्य संबंधों से परे नए संदर्भों एवं मान्यताओं के साथ परखा गया है। महिला कथाकारों की कृतियों में नारी का मानसिक संघर्ष का चित्रण दिखाई देता है। उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में दिशा गत विकास को साफ तौर पर लक्षित किया जा सकता है। उषा प्रियंवदा नारी को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की। इनका लेखन नारी पर केंद्रित रहा है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास आधुनिकता की प्रवृत्तियों का सटीक उदाहरण है। उनकी अधिकांश कथाओं में पश्चिमी परिवेश का व्यापक और सजीव चित्रण मिलता है। उनके पात्र अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि है। वे किसी एक जाति, धर्म या द्वेष की सीमा से बंधे हुए नहीं है। कुंठा, संत्रास, यौन चित्रण, अजनबीपन, पश्चिमीकरण, वैज्ञानिक बोध, अन्तर्राष्ट्रीय रुचि आदि का चित्रण अनेक कथाओं में मिलता है। उन्होंने आधुनिक बोध से उत्पन्न मूल्य चेतना को अपनी कथाओं में व्यक्त किया है।

'शेषयात्रा' प्रसिद्ध कथा लेखिका उषा प्रियंवदा का लिखा उपन्यास है। यह उपन्यास साल १९८४ में लिखा गया था। यह उपन्यास नारी जीवन की त्रासद स्थितियों को दर्शाता है। इसमें लेखिका ने नारी चरित्रों के भावना शील मनोजगत और आत्मद्वंद्व को बारीकी से दिखाया है। इस उपन्यास में आधुनिक जीवन की ऊब भरी जिंदगी और छटपटाहट झलकती है। इस उपन्यास में लेखिका ने अनु, प्रणव, दिव्या और दीपांकर जैसे पात्रों को अंतरंगता से चित्रित किया है।

'शेषयात्रा' उपन्यास में चित्रित नारी चेतना :

उषा प्रियंवदा कृत 'शेषयात्रा' उपन्यास में आधुनिक नारी की समस्त दशाओं का चित्रण अत्यंत सहजता से किया गया है। नायिका अनु के माध्यम से विभिन्न स्थितियों से उभरती भारतीय समाज की नारी के बदलते हुए रुप को अंकित किया गया है। नारी जितनी भी कुंठाओं को पार कर आगे बढने का प्रयास कर रही है वह नारी चेतना का ही परिणाम है। जो निम्नलिखित हैं -

१) स्वच्छंदतावादी, स्वाभिमानी एवं आत्मनिर्भर आधुनिक नारी :

'शेषयात्रा' इस उपन्यास में एक भोली–भाली भारतीय लड़की से परित्यक्ता पत्नी और फिर आत्मविश्वासी और सफल प्रौढा बनने की कहानी बताई गई हैं। इसमें एक ऐसी नारी का चित्रण हुआ हैं, जो पति द्वारा त्याग दिये जाने पर भी टूटती नहीं बल्कि साहस, मेहनत तथा कठोर जीवन-संघर्ष से अपनी दारुण-स्थिति को बदलकर एक नई जिंदगी के निर्माण में सफल होती हैं। लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से सूचित करती है कि आज की नारी अपनी त्रासद स्थिति से उभरने के लिए दीर्घ मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर आत्मनिर्भर बन सकती हैं। अपनी जिंदगी स्वयं गढ सकती हैं, किसी दूसरे पर निर्भर रहना आज की नारी का यथार्थ नहीं हैं।

'शेषयात्रा' उपन्यास विभा, नीरजा, किरत सभी स्वच्छंद प्रवृत्ति की आधुनिक नारियाँ हैं। पति होने के बावजूद दूसरे पुरूष से संबंध रखना इनके लिए आम बात हैं। विभा के अनुसार- "अच्छे घर, मियाँ और बच्चों के बावजूद भी तो एक औरत को कुछ खाली-खाली लग सकता हैं।"[१]

जब अनु का पति प्रणव बदसूरत चंद्रिका की खातिर अनु को तलाक दे देता हैं। तब अनु बहुत निराश तथा बेबस हो जाती हैं। अनु का हाल देखकर उसकी सहेली दिव्या उसको आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनने की प्रेरणा देती हैं। दिव्या कहती हैं- “तुम्हें अवसर मिलता तो तुम भी डॉक्टर हो सकती थीं। विभा की तरह, प्रणव की तरह। तुमने ड्रामा और फिल्म विभाग में डिग्री ली होती तो तुम भी चंद्रिका की तरह फिल्म बना सकती थीं। अनु तुम में किसी चीज की कमी नहीं हैं।“[२] अनु खुब परिश्रम करके डॉक्टर बन जाती हैं। जब प्रणव अनु से उसकी तरक्की का राज पूछता है तो अनु बताती है- “मेरे पास कुछ पैसा था, कुछ नौकरियाँ की, कुछ कर्ज लिए एक बार शुरूवात करके फिर छोडने का सवाल ही नहीं उठा। किसी न किसी तरह से पेट के बल रँगते हुए सैनिक की तरह मैंने यह पुल पार कर ही लिया।“[३] इससे अनु के आत्मविश्वास का परिचय मिलता हैं।

इस प्रकार आधुनिक चेतना से संपन्न भारतीय नारी उच्च शिक्षा प्राप्त कर आज उसके दुर्बल कंधों ने आगे बढकर जीवन के पुरूषोचित बोझ को भी उठा लिया हैं। आज शिक्षित नारी में नवीन चेतना व जागृति उत्पन्न करनेवाले प्रमुख तत्व शिक्षा, स्वतंत्रता, समाज सुधार आंदोलन आदि में ‘शेषयात्रा’ की नायिका अनु में देख सकते हैं।

२) परंपरागत, आदर्शवादी एवं विद्रोही आधुनिक नारी :

‘शेषयात्रा’ उपन्यास के पूर्वार्ध्द में अनु का जो रुप उभरकर आया है। वह एक आदर्श पत्नी का ही है। पारंपरिक पत्नी बोध से ओतप्रोत हैं। भारतीय पारंपरिक संस्कारों में पली अनु पति को ही अपना सर्वस्व मानती हैं। प्रणव की रुचि और आकांक्षाओं के अनुसार स्वयं को एकदम आधुनिक बनाने में उसे काफी संघर्ष करना पडता हैं। स्वयं को पति के अनुरूप ढालना अपना कर्तव्य समझती हैं- “ जो जिम्मेदारी प्रणव ने पकडायी थी, जो भूमिका दी गयी थी, वही निभा रही थी। खाना बनाना, घर साफ-सुथरा रखना, प्रणव के स्तर के अनुसार कपडे पहनना, पार्टियों में चुपचाप मुस्कुराते रहना।“[४] इस प्रकार अनु पति धर्म का पालन करती हुई एक आदर्श पति के स्वरुप को चिन्हित करती हैं।

‘शेषयात्रा’ की नायिका अनु पति देवता पर बलिहार है। जब वाटरमैन अनु को समझाने की कोशिश करता हैं कि प्रणव एक अच्छा पति नहीं बन सकता। तब अनु कहती है- “ मैं अपने पति के साथ बहुत सुखी हूँ, किसी दूसरे.....। इतना ही नहीं जब प्रणव उसको त्याग देने की बात कहता है तो वह प्रणव के मुँह पर हाथ रखकर कहती है- “ ऐसी बात कभी फिर मत कीजिएगा। हँसी में भी नहीं। मैं जहर खाकर मर जाऊगी।“[५] इस तरह हमें भारतीय परंपरागत नारी का चित्रण मिलता हैं।

अनु पर मार्क्सवाद का प्रभाव कहीं न कहीं दिखाई देता हैं। इसीलिए तो तलाक के बाद वह एक सफल डॉक्टर बन जाती है और दूसरा विवाह करके एक बच्ची की माँ बन जाती है। वह कहती है– “उस दिन के बाद मैं एक बार भी नहीं रोई। मालूम नहीं मेरे अंदर इतना तेज, इतना करेज कहाँ से आ गया। मुझे लगा, मैं कुछ भी बन सकती हूँ.....।“[६] अनु जैसी विद्रोही आधुनिक नारी तलाक जैसी समस्या से उभरकर अपना जीवन बर्बाद न करके स्वंय अपने जीवन को आबाद करती हैं।

३) जिजीविषा, उद्योगशील एवं संघर्षशील आधुनिक नारी :

‘शेषयात्रा’ की अनु जिजीविषा के कारण ही कसकर संघर्ष करती हैं। संघर्ष द्वारा वह अपने नए व्यक्तित्व

के निर्माण में सफल होती दिखाई देती हैं। अनु को प्रणव तलाक देने के बाद भी वह हारती नहीं, टूटती नहीं बल्कि अपनी जीवनशक्ति के बल पर अपने व्यक्ति त्व का पुनर्निर्माण करती हैं। दुबारा विवाह करके एक सफल वैवाहिक जीवन जीती हैं। दिव्या से मिली प्रेरणा उसमें जिजीविषा उत्पन्न करती हैं। वह फिर से आगे पढने का निर्णय लेती हैं। अनु के जीवन में यह परिवर्तन उसके व्यक्तित्व को सदृढता एवं नवीनता प्रदान करता हैं।

'शेषयात्रा' में दिव्या एक कामकाजी आधुनिक नारी है। दिन में पढकर शाम को जयन्त के साथ रेस्तराँ में 'वेट्रेस' का काम करती हैं। वह अनु से कहती हैं- "अकसर हम जिंदगी के ऐसे ठिकाने पर आ खडे होते हैं कि मालूम नहीं होता किस तरफ मुडे। इधर भी जा सकते हैं, उधर भी।"[७] दिव्या आशावादी आधुनिक नारी है जो समस्या का तोड ढूँढने की कोशिश करती है और बाद में एक सफल डॉक्टर बन जाती हैं।

इस उपन्यास में नारी का स्वाभिमानी रुप तथा पति के त्याग देने पर नई जिंदगी नए सिरे से शुरू करने वाली संघर्षमय नारी रूप का चित्रण अत्यंत उत्कृष्टता से किया गया है। वह परंपरागत नारी जीवन को तिलांजलि देते हुए आधुनिक नारी का वरण करती हैं। नायिका विवाह के बंधन में फँसकर पति की गैरजिम्मेदारी के कारण कई कष्ट झेलती है। वह अपने नसीब को कोसते हुए आँसू नहीं बहाती अपितु पूरी मेहनत से अपनी पढाई पूरी करती है। अपना भविष्य बनाती है। अपनी परिस्थितियों में बदलाव लाती हैं। इस प्रकार यही साहस और संघर्ष नारी चेतना की दिशा में सशक्त योगदान देता हैं।

निष्कर्ष :

उषा प्रियंवदा कृत 'शेषयात्रा' में नारी चेतना को उजागर किया गया हैं। इस उपन्यास के द्वारा हमें यह ज्ञात होता हैं कि नारी जितनी भी कुंठाओं को पार कर रही हो, उसे जमकर अपना जीवन बिताना चाहिए। नारी को हमेशा आगे बढने का प्रयास करना चाहिए। इस उपन्यास की नायिका अनु के माध्यम से परित्यक्ता नारी को उजागर किया गया हैं। इतना ही नहीं, इस उपन्यास के द्वारा उषा प्रियंवदा प्रणव जैसे इन्सान से बचने के लिए जागरुक करती हैं। इस उपन्यास की नायिका अनु नारी शक्ति का प्रतिरुप हैं। इसलिए उसे हमेशा चेतनाबध्द होना आवश्यक हैं। 'शेषयात्रा' उपन्यास का सर्वोत्तम उद्देश्य यह है कि नारी चेतना श क्ति बनकर पुरूष के समान काम कर रही हैं। जब प्रणव अनु का त्याग करता हैं, तब वह अपनी उच्च्व शिक्षा प्राप्त करके नौकरी भी करने लगती हैं। आज की चेतना संपन्न नारी नैतिकता के धरातल पर अपनी मान्यताएँ स्वंय निर्मित कर रही हैं। 'शेषयात्रा' की अनु डॉ. प्रणव के दांपत्य जीवन में विफल होती हैं। वहीं डॉ. अनु डॉ. दीपांकर के साथ पुनर्विवाह करके सफल दांपत्य जीवन बिताती हैं। अनु एक चेतना संपन्न नारी है। उषा प्रियंवदा कृत 'शेषयात्रा' उपन्यास का मूल उद्देश्य यह साबित करना है कि आज की नारी कडी मेहनत करके शिक्षा प्राप्त करती हैं। परंपरागत रुढियों का उल्लंघन करने में सफलता पा रही हैं। अनु जैसी नारी सम्मानपूर्वक पदों पर आसीन हो रही हैं। कुल मिलाकर आज नारी की स्थिति सम्माननीय बन गई हैं। नारी एक चेतना शक्ति हैं। जिसे पाकर यह संसार पूर्ण रुप हासिल किया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ २४

- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ १२९
- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ ११४
- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ ७५
- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ १९
- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ १११
- उषा प्रियंवदा : शेषयात्रा : पृष्ठ ७२